

सत्य साहित्य



सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 7 / अंक 4, जुलाई 2024 • Year 7 / No. 4, July 2024

जरा ज़रा शरणा मेरे शर्म की, मेरा राम करुणा निधान है।
घरे घरे में है शर्म रहा, बड़ी सबका भगवान है ॥

1) लिया, पासरा जिन नाम का, बड़े बन बाघा प्रभु शर्मका
जिस नाम से पत्थर तरे, फिर तेरा तरना पासान है।
जरा ज़रा शरणा ----

2) भक्ति में तू हो मग्न, उसे जाने की लगा लगान।
तेरे पाप सब धुल जायेंगे, यह नाम इतना महान है ॥
जरा ज़रा शरणा ---

3) तेरे भक्त कब से पुकारते चरणों में, परज गुजारते
मत मूल जाना है प्रभु, तेरे भक्त बड़े प्रजान हैं
जरा ज़रा ----

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- Glory of the Lord's Power (Ekadashopnishad)
- अहंकार
- ब्रह्मविद्या
- श्रीरामशरणम् लोट: एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों से
- आप बीती
- बच्चों के लिए
- कैलेन्डर

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

व्यास पूर्णिमा की बधाई

भक्त स्वामी जी महाराज तथा उनकी संस्था के नियमों -
 प्रणयों में इतना ही रहिये - उन सब का पालन हो - फिर
 भय - चिन्ता - सन्देह का कोई स्थान नहीं। व्यास पूर्णिमा का
 दिन किसी व्यक्ति की सेवा का दिन नहीं - बल्कि उत्प्रेक
 व्यक्ति में निराजमान विद्यता, परम गुरु श्री राम के
 पूजन का दिन है। उत्प्रेक साधक इस दिन जन्म लेता
 है। स्वामी जीवन संघर्षी - साधनामय हो, सबके उन हो
 सौंद मानवता की सेवा को समर्पित हो

Just stay within the ambit of the rules and ideals of Swami ji Maharaj and his institution. They must all be upheld. Then there is no scope of fear, worry, or doubt. The day of Vyas Purnnima is not a day for worshipping any single individual but a day for worshipping the divinity, the supreme guru Shri Ram, residing in every individual. Each spiritual aspirant takes a vow on this day that their remaining life will be disciplined, dedicated to spiritual practices, filled with love for everyone, and devoted to the service of humanity.



भगवत् साक्षात्कार की शताब्दी के उपलक्ष्य में कार्यक्रम

स्वामी सत्यानंद जी महाराज के भगवत् साक्षात्कार की शताब्दी वर्ष का शुभ आरम्भ 21 जुलाई 2024 व्यास पूर्णिमा से हो जायेगा।

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट ने संकल्प किया है कि अधिक से अधिक साधना करते हुए इस शताब्दी उत्सव को वर्ष भर पूरे उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाएगा। श्री रामशरण दिल्ली में वर्ष भर, प्रत्येक महीने होने वाले कार्यक्रमों का विवरण नीचे दिया गया है।

इसके अनुरूप अन्य केन्द्रों पर भी, स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए, हर महीने श्री स्वामी जी महाराज के सद्ग्रन्थों के पाठ, अखण्ड जाप और सवा करोड़ के जाप का विशेष आयोजन रखा जा सकता है।

व्यक्तिगत रूप से भी साधकों को इस पुण्य पर्व के अवसर पर विशेष साधना साधने का संकल्प लेना चाहिए जैसे, सवा करोड़ नाम-जाप संकल्प। गुरुजनों की आज्ञानुसार अपने व्यवहार और अपनी दिनचर्या को साधना-मय बनाना और उसके अनुसार जागना, आहार-विहार, ध्यान, जाप, स्वाध्याय आदि करने का संकल्प लेना चाहिए।

श्रीरामशरणम् दिल्ली में भगवत् शताब्दी के उपलक्ष्य में श्री रामायण जी एवं श्री भक्तिप्रकाश जी के कार्यक्रमों का विवरण (ये कार्यक्रम दैनिक व साप्ताहिक सत्संग के बाद आरम्भ होंगे)

जुलाई	21.7.2024 रविवार (व्यास पूर्णिमा विशेष सत्संग सांय 5:30 से 7:00 तक)	मार्च	15-3-25 से 16-3-25 शनिवार-रविवार (परम पूजनीय श्री महाराज जी का अवतरण दिवस)
श्री रामायण जी पाठ		मई	24.5.2025 से 25.5.2025 शनिवार-रविवार
अगस्त	10.8.2024 से 11.8.2024 शनिवार-रविवार	जून	21.6.2025 से 22.6.2025 शनिवार-रविवार
सितम्बर	7.9.2024 से 8.9.2024 शनिवार-रविवार	जुलाई	2.7.2025 से 3.7.2025 बुधवार-गुरुवार (परम पूजनीय श्री महाराज जी का निर्वाण दिवस)
अक्टूबर	2.10.2024 से 3.10.2024 बुधवार-गुरुवार (परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का अवतरण दिवस)	श्री भक्तिप्रकाश का अखण्ड पाठ नवम्बर 2024 और अप्रैल 2025 में होगा जिसकी तिथि बाद में बता दी जाएगी।	
दिसम्बर	31.12.2024 से 1.1.2025 मंगलवार-बुधवार	जुलाई	10.7.25 गुरुवार को व्यास पूर्णिमा पर विशेष सत्संग।
जनवरी	25.1.2025 से 26.1.2025 शनिवार-रविवार		
फरवरी	22.2.25 से 23.2.25 शनिवार-रविवार		

Glory of the Lord's Power

(Ekadashopnishad)



सत्यानन्द

'Very well.'

Agni ran towards him. The *Yaksha* asked him, 'Who are you?' He replied, 'I am *Agni*. I am *Jataveda*.' The *Yaksha* then asked *Agni*, 'What power do you have, such as you are?' *Agni* said, 'I can burn everything on this earth; that is my power.'

The *Yaksha* placed a straw in front of him and said, 'Burn this.' *Agni* rushed towards it with all his might, but he could not burn it. *Agni* then returned and said, 'I could not find out who this *Yaksha* is.'

The *devas* then said to *Vayu* (the god of wind god), 'O *Vayu*! Find out who this *Yaksha* is.' He replied, 'Very well.'

Vayu ran towards him. The *Yaksha* asked him, 'Who are you?' He replied, 'I am *Vayu*, I am *Matarisva* (the one who moves in the air), the all-pervading wind.'

The *Yaksha* asked, 'What power do you have, such as you are?' *Vayu* replied, 'I can blow away everything on this earth.'

He placed a straw in front of him and said, 'Blow this away.' *Vayu* rushed towards it with all his might, but he could not blow it away. *Vayu* then returned and said to the *devas*, 'I could not find out who this *Yaksha* is.'

The *devas* then said to *Indra* (the god of rain and storms), 'O *Maghavan* (Bountiful One)- *Dhanpatte* (Lord of wealth)! Find out who this *Yaksha* is.' He said, 'Very well' and ran towards it, but the *Yaksha* disappeared before him.

In this allegory, *Agni* and *Vayu* have two meanings. Firstly, *Agni* and *Vayu* are the two most powerful elements, but the power

In the third section, there is a description of the glory of the Lord's power, and that description is illustrated through beautiful figures of speech.

The Supreme Lord won a decisive victory for the *devas* (gods); he created the universe. Indeed in that victory of the Supreme Lord the *devas* became endowed with glory; they became powerful. The *devas* began to think that this victory is indeed ours and this glory is ours alone.

The infinitely powerful God created the universe and infused power into the *devas* like *Agni* and others. The *devas* considered that power as their own, meaning it was believed that the creation of the world was the glory of the *devas*. That there was no other god apart from them.

That *Brahman* (the Absolute; the Supreme Reality of the Vedanta philosophy) understood these *devas* and became aware of their arrogance. And He appeared before those *devas*. But they did not recognize who this *Yaksha* (demi-god)- this venerable being- was.

The *devas*, filled with wonder, said to *Agni* (the god of fire), 'O *Jataveda* (all-knowing)! Find out who this *Yaksha* is.' He replied,

within them is God's; without Him, they are insignificant. Secondly, *Agni* and *Vayu* symbolize the primary senses of sight and hearing. The Lord cannot be perceived by the eye because He transcends nature. He cannot be known by the ear either. The supreme form of God is beyond the reach of all five senses. *Indra* symbolizes both electricity and mental disposition; the flash of lightning and mental imagination are incapable of revealing and comprehending the form of God. This allegory reveals both the transcendental and spiritual aspects.

In that same sky *Indra* saw a lovely woman adorned with great splendor, named *Uma*. He asked her, 'Who is this *Yaksha*?'

Here, 'Uma' refers to the dazzling light of the sun in the celestial realm. In the spiritual context, it signifies pure intellect and understanding.

FOURTH SECTION

Uma said to *Indra*, 'This is *Brahman*. And in this victory of *Brahman*, in its power, become glorious.' From this statement of *Uma's*, *Indra* understood that this is *Brahman*.

Brahman is perceived through intellect. The senses and mental imaginations cannot

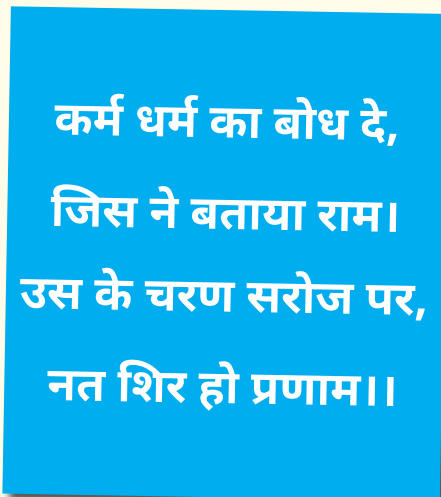
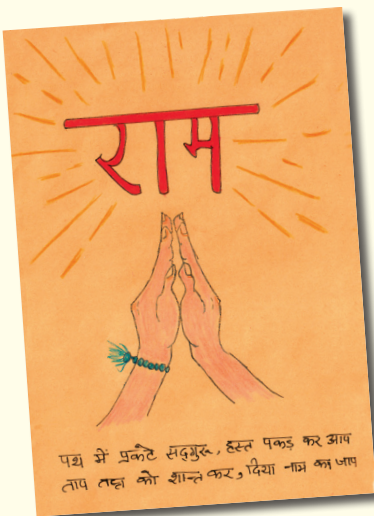
know it. In intellect also, the small part of faith and belief is the introducer of the infinitely powerful God.

Therefore, the *devas Agni*, *Vayu*, and *Indra* are superior to other *devas*. Indeed, they alone were able to come so close to it. Indeed, they were the first to know that this is *Brahman*.

And therefore, *Indra* is superior to the other *devas*. He alone was able to come so very close to this *Brahman*. He was the first to know that this is *Brahman*.

The *devas* in the form of eyes, ears, and mental disposition are superior to other *devas* because through them, the divine play of *Hari* (Almighty) is perceived. It is through these three means that the glory of the Lord is known. Among the eyes and ears, the mental disposition is the most superior. With the help of theistic intellect, the mental disposition perceives the majesty of the Lord. It is through pure intellect that thoughts filled with faith, reverence, and devotion arise in the mind. Therefore, the mental disposition imbued with faith is the most excellent for understanding the divine play of *Hari* (Almighty).

Ekdashopnishad, Teesra Khand Page 19 to 23 ■



अहंकार

प्रेम

अहंकार से जो कर्म किया जाए—वह भी रजोगुणी। अभिमान—यदि मैं न होता तो भारत का बेड़ा... या मेरे बिना यह काम न चलता।

सेठ के अभाव से दफ़तर, दुकानें तो चलती रहती हैं। एक driver गया, दूसरा आ गया—engine तो चलता रहता है। अहंकार नहीं करना। अहंकार भिन्नता पैदा करता है—भिन्नता से वह शिकार बन जाता है।



Napolean ने रुस की लड़ाई में blackout के लिए कहा। एक नवविवाहित युवक ने दीपक जला कर अपनी भार्या को लड़ाई का हाल लिखना चाहा तो वह निशाना (target) बन गया। अहंकार का जब lamp जलता है तो सबकी नजरों में निशाना बनता है और कुचला जाता है। अलैहदगी — अपनी पृथकता प्रदर्शित करता है तो वह अहंकार है, डींगे मारना है।

सब अंग शान्त रहने से ठीक शरीर चलता है harmony में सुख है। समता रहे शरीर में, तो सुख है। दिल अपनी हस्ती को पृथक जाहिर करे तो — धड़कन हो जाए तो — अलैहदगी पृथकता जाहिर करेगा।■

ब्रह्मविद्या

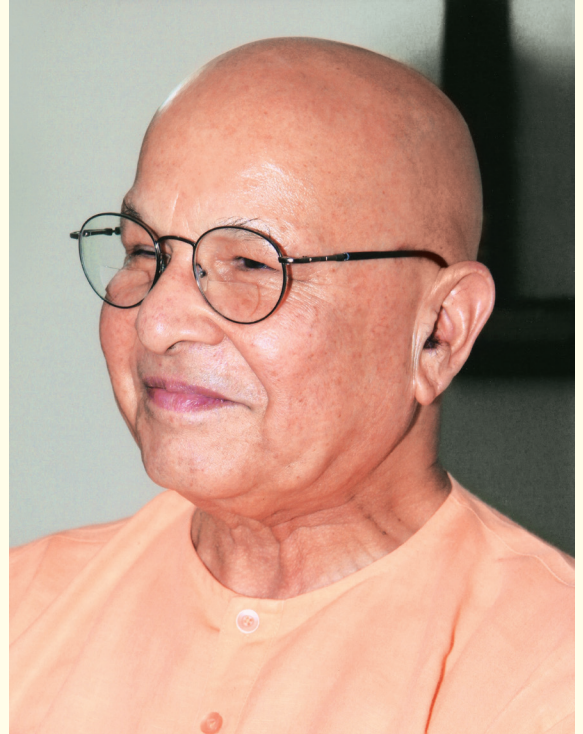
१२०१/२०२१

ब्रह्मविद्या जो हृदय में उदित होती है और अज्ञानता = अविद्या का निश्चय
करती है - ब्रह्म है उपनिषद्। अर्थ है आत्म-ज्ञान की समाप्ति = विलक्षण
पारलौकिक अज्ञान का शून्य करने वाली ब्रह्मविद्या। अर्थ है उपासना।
आत्मा-परमात्मा का सत्य जीवन = ब्रह्मविद्या का रहस्य जानना।

पूज्य पाद स्वामी जी महाराज ने आज उपनिषद् सार का प्रसंग शुरू किया है। वेद फरमाते हैं, श्रुतियाँ वेदों का वह भाग हैं जिसमें उपासना भक्तिधर्म का वर्णन है, जिन्हें उपनिषद् कहा जाता है। उपनिषद् अनेक होते थे। इन्हें श्रुतियाँ इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनका लिखित वर्णन कहीं उपलब्ध नहीं था। संत महात्माओं को, ऋषियों मुनियों को यह याद होते थे। ये दूसरों को सुनाए जाते थे तो उन्हें याद हो जाते थे। यह विद्या, कान के माध्यम से एक ऋषि से दूसरे ऋषि में जाती थी - इसलिए इन्हें श्रुति कहा जाता है, श्रुतियाँ कहा जाता है।

वह ब्रह्मविद्या, जिसके भीतर उदय होने से, हमारी अज्ञानता का विध्वंस हो जाए उसे ही उपनिषद् कहा जाता है। उपनिषद् अनेक थे, लोप हो गए। काफी सारे थे अब थोड़े से रह गए हैं।

स्वामी जी महाराज जी ने उन सब में से 11 उपनिषदों को चुना तो एकादशोपनिषद् की रचना हुई है। उन्होंने उनका टीका किया - अर्थ समझाए। अन्य संत महात्मा कोई 10 चुनता है कोई 11 चुनता है। मुख्य समझिएगा 10-11 उपनिषद् ही हैं। उपनिषदों की एक शैली है-एक गुरु या आचार्य होता है और एक मुख्य शिष्य होता है। इनके बीच कहानी के माध्यम से जो वार्तालाप हुआ है, वह उपनिषदों में वर्णित है। अनेक कहानियाँ हैं। उपनिषदों में आज केन उपनिषद् से एक कथा शुरू करते हैं। कठोपनिषद् में नचिकेता की प्रसिद्ध कथा है। अनेक सारे उपनिषदों के नाम हैं। केनोपनिषद्



की कथा शुरू करते हैं। बहुत रोचक है। इस कथा को आप सब जानते ही हैं, पर फिर भी इनसे मन तो नहीं भरता। हमेशा दिल करता रहता है ये कथाएँ और सुनें और इनका कुछ अंश तो हमारे जीवन में उतर सके।

आज की कथा में देवताओं और असुरों में घमासान युद्ध हुआ है। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ है। देवता जीत गए हैं। असुर सभी के सभी हार गए हैं। बड़ी बुरी तरह से हारे हैं। देवता इकट्ठे हुए हैं। इंद्र देवता स्वयं विराजमान है। देवेंद्र इंद्र देवता, मानो देवताओं के राजा वह भी

विराजमान है। वायु देवता, अग्नि देवता, इत्यादि इत्यादि मुख्य देवता भी हैं। इसके अतिरिक्त कितने लाख करोड़ देवता इकट्ठे होकर अपनी अपनी प्रशंसा की चर्चा कर रहे हैं। “मैं न होता तो विजय न प्राप्त होती।” “मैंने उनका यह कर दिया, मैंने उनका वह कर दिया।”

यदि यह कहा जाए कि यह बातें इंसानों में कम है और देवताओं में अधिक हैं, तो झूठ नहीं है। वे बेचारे कुछ कर नहीं सकते इसीलिए ईर्ष्या में जलते रहते हैं। परमेश्वर की कृपा है, हमें मानव जीवन मिला हुआ है, मानव योनि मिली हुई है। कर्म करने में स्वतंत्र हैं। अपनी ईर्ष्या को दूर कर सकते हो, अपने आचरण को बदल सकते हो, अपने स्वभाव को बदल सकते हो। देवता नहीं कर सकते। वह तो बेचारे अपने पिछले जन्मों के प्रचुर पुण्य इकट्ठे किए हुए हैं। उनका भुगतान भुगतने के लिए गए हुए हैं। टस से मस नहीं कर सकते। जिसके अंदर ईर्ष्या है रहेगी, द्वेष है रहेगा, अभिमान है रहेगा। वह इन सब बातों को इन दुर्गुणों को दूर नहीं कर सकते। इसलिए यदि यह कहा जाए कि आप लोग देवताओं से बहुत आगे हो तो यह झूठ नहीं है।

क्यों? परमेश्वर ने आपको कर्म करने की स्वतंत्रता दे रखी है। आपको अपना स्वभाव बदलने की स्वतंत्रता दे रखी है। आपको दुर्गुण दूर करने का ढंग सिखाया हुआ है। यही ब्रह्मविद्या है। आप दुर्गुणों को दूर कर सकते हो। अपने आप को सद्गुणों से संपन्न कर सकते हो। देवता ऐसे नहीं कर सकते। देवता उतना ही काम कर सकते हैं जितना उनको दिया गया है। अग्नि का काम जलाना है, बस जलाएगी ही। वायु का काम बहना है, गंध का संचार करना है, इससे ज्यादा वह कुछ नहीं कर सकती। आप सब कुछ कर सकते हो। सब कर्म करने की आपको स्वतंत्रता है। दुष्कर्म भी कर सकते हो, सत्कर्म भी कर सकते हो, mixed भी कर सकते हो।

अनेक सारी बातें आपको करने का परमेश्वर ने

अधिकार दिया है, स्वतंत्रता दी है। थोड़ी दी है, बहुत दी है पर दी है। देवताओं के पास इस प्रकार की स्वतंत्रता नहीं है। इसलिए स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, सांसारिक सुख एवं स्वर्ग सुख, स्वर्ग की बात स्वामी जी सुनना नहीं चाहते—छी छी छी छी स्वर्ग की बात मत करो। आप परमधाम की बात करो। मेरे शिष्य हो राम—राम जपने वाले हो, आपको परमधाम की प्राप्ति करनी है। आपको परमात्मा की प्राप्ति करनी है। स्वर्ग तो यहाँ से उठकर वहाँ चले गए।

क्या है स्वर्ग? कुछ भी नहीं। यहाँ से ऊपर का लोक पितृलोक, स्वर्गलोक क्या है? क्या यात्रा कर ली? क्या उपलब्धि कर ली? सांसारिक सुखों एवं स्वर्ग सुखों की उपेक्षा करना यह वैराग्य है।

यह वैराग्य देवताओं में नहीं आ सकता। आप वैरागी बन सकते हो। आप में यह वैराग्य आ सकता है क्योंकि आपको पता है कि यह सांसारिक सुख तुच्छ है, क्षणभंगुर है, बेकार है, दुखयुक्त है। सुख क्या है? दुख अधिक है सुख कम है इसमें और यदि सुख है भी तो बहुत थोड़ी अवधि के लिए। बहुत थोड़े समय के लिए। यह बातें देवता नहीं समझ सकते। बुद्धि तो होगी उनके पास परन्तु न जाने क्यों नहीं समझ सकते। पर इंसान समझ सकता है। इसलिए आप बुद्धिजीवी इस सृष्टि के सिरमौर माने जाते हो। सबसे बड़े आप को कहा जाता है, इंसान को, मानव को, बुद्धि प्रधान इंसान को ऐसी रचना परमेश्वर ने रची है।

तो, देवता बैठे—बैठे अपनी अपनी घंटी बजा रहे हैं, तूती बजा रहे हैं कि मैंने यह कर दिया है, मैंने वह कर दिया, यदि मैं ऐसा न करता तो आप कभी जीत न पाते, इत्यादि इत्यादि। इन सब बातों से, चाहे वह इंसान करता है या देवता करते हैं, Suffer करने वाला तो परमात्मा ही है। वह अपनी रचना पर दुखी होता है।

बनाया तो ऐसा नहीं था, जैसे यह behave कर रहे हैं। चाहता तो और कुछ था कि यह ऐसा जाएँगे, ऐसा कहेंगे लेकिन यह तो बिल्कुल विपरीत कर रहे हैं, भगवान को इससे बहुत कष्ट होता है। बहुत दुःख होता है। उसको कुछ करना पड़ता है। वह हमारे

प्रत्येक सफलता जिंदगी को नम्रता दे, अभिमान न दे, यह परमात्मा चाहता है। सफलता देने वाला मैं हूँ। आप इस बात को क्यों भूलते हो। क्या किया है आपने सफलता प्राप्त करने के लिए। यदि आप कर सकते होते तो सफलता मेरे पास न होती।

सिर पर डंडा मारकर तो हमारा अभिमान तोड़ता है। वही हमारे अंदर यह जितने भी दुर्गुण हैं, उनको दूर करने के कुछ न कुछ साधन अपनाता है। किसी सिखाने वाले को भेज देता है। जा तू उसको जाकर सिखा। वह कुछ सुधरे। कहाँ जा रहा है वह? पतन को प्राप्त हो रहा है। तो सारे बच्चे तो उसके अपने हैं। उसके तो सारे अपने अंग हैं सारी सृष्टि और कुछ नहीं उसके अपने कटे हुए अंग हैं। उसने अपने अंग काट-काट कर तो सारी सृष्टि का निर्माण किया हुआ है। वह सब को अंगीकार करना चाहता है। अंगीकार क्या, वह चाहता है सारे के सारे अंग पुनः मिलें तो वह पूर्ण हो जाए। यह परमात्मा की भावना है। आज जब इस प्रकार की बातचीत हो रही है तो परमात्मा बहुत कष्ट में है। इनके अभिमान को, इनके कर्तापन को, इनकी superiority को देख कर पछताता होगा न परमात्मा। परमात्मा सोचता होगा कि इससे अच्छा तो होता कि इन्हें जिताया न होता। यह हार गए होते तो कम से कम इनके अंदर इस प्रकार की उत्कृष्टता तो न आती। प्रत्येक सफलता जिंदगी को नम्रता दे, अभिमान न दे, यह परमात्मा चाहता है। सफलता देने वाला मैं हूँ। आप इस बात को क्यों भूलते हो। क्या किया है आपने सफलता प्राप्त करने के लिए। यदि आप कर सकते होते तो सफलता मेरे पास न होती। सफलता भी मेरे पास है, असफलता भी मेरे पास है। आप तो मात्र कर सकते हो, मेहनत कर सकते हो, पास

करना फेल करना आप का विषय नहीं है। यह तो मेरे हाथ में है। मुझे इस प्रकार से मजबूर न करो कि मैं मजबूर हो जाऊँ, पछताऊँ कि मैंने आपको क्यों सफलता दे दी? कम से कम आप के अंदर अभिमान तो न आता। आपके अंदर Superiority

तो न आती।

आज भगवान श्री बिल्कुल इसी प्रकार का महसूस कर रहे हैं। जहाँ यह चर्चा हो रही है आपस में, वहाँ थोड़ी दूर से अपने दर्शन देते हैं। भगवान रूप में नहीं बल्कि एक अद्भुत सी विचित्र सी, मूर्ति बन कर खड़े हैं। बड़ी चमक है, बड़ी दमक है, बड़ा उज्ज्वल सा चेहरा बनाया हुआ, चमकता चेहरा, आभावान चेहरा बनाया हुआ। मानो ऐसा कभी पहले देखा न हो। चर्चा का विषय बदल गया है। यह कौन है सामने? इंद्र देवता इत्यादि बैठे हुए हैं। कौन है यह सामने? पहचान में नहीं आ रहे। कोई यक्ष लगते हैं। चलो पता करते हैं कौन है यह? किस काम के लिए यहाँ आए हैं। क्यों इधर-उधर घूम रहे हैं? क्या हमें दर्शन देने के लिए आए हैं? क्या हमें कुछ देने के लिए आए हैं? कौन है यह? चलो पता करते हैं।

विचार विमर्श के बाद अग्नि देवता जो बहुत अपनी प्रशंसा कर रहे थे, आत्मश्लाघा कर रहे थे। आपको याद है न, अपनी प्रशंसा से आपके पुण्य नष्ट होते हैं, याद रखिएगा इन बातों को। कभी नहीं भूलना, अपनी प्रशंसा आपके पुण्य को नष्ट करती है। इतनी कमाई होती नहीं जितनी नष्ट हो जाती है। सिर्फ अपनी प्रशंसा करके ही नहीं, अपनी प्रशंसा सुनना भी पुण्यों का नाश करती है। लेकिन स्वयं करनी तो बहुत ही नाश करती है।

अग्निदेव अपनी चर्चा कर रहे थे तो देवताओं ने सोचा चलो, यह हमसे बड़े हैं इनको बड़प्पन दें, इन्हीं को भेजें। देवताओं ने अग्निदेव को कहा, "आप जाओ, पता करके आओ वह सामने कौन है?" परन्तु भगवान श्री के अपने ढंग हैं समझाने के, समस्याओं को सुलझाने के। सिर पर ऐसा डंडा मारते हैं जोर से कि आकाश से नीचे गिरा कर रख देते हैं। काम ही उनका यही है। जो चढ़ाना जानता है, वह नीचे फेंकना भी जानता है और यह सब प्रायः करता रहता है। यही उसका काम है तभी उसे परमात्मा कहा जाता है। किसी ने पूछा परमात्मा क्या करता है? कभी ऊपर चढ़ाता है फिर नीचे फटाक से मारता है। यह परमात्मा का काम है। यह और कोई नहीं कर सकता। यह वही करता है।

अग्नि देवता ने उन्हें जाकर प्रणाम किया। परमात्मा ने पूछा, "कौन हैं आप, बताइए?" अग्नि देवता जैसे व्यक्ति से कोई पूछे कि कौन हैं आप? तो कहाँ रहा उसके अंदर अभिमान? वह तो बेचारा पानी पानी हो गया। वह सोचता है कि सारा संसार मुझे जानता है यह ऐसा कौन है जो मुझे नहीं जानता। कभी-कभी यह सब बातें हम सब में भी देखने को आती हैं। आकर मेरे सामने व्यक्ति खड़ा हो जाता है, जन्मदिन है उसका पर कहना नहीं चाहता। कहने में तो उसे छोटापन महसूस होता है।

I should remember the birthday उसका जन्मदिन, अमुक व्यक्ति का जन्मदिन मुझे याद होना चाहिए। यह बातें Universal हैं। कोई किसी एक में नहीं है। मानो मुझे इसका जन्मदिन स्वयं याद करके तो बधाई देनी चाहिए। मुझे बताने की आवश्यकता न पड़े कि आज मेरा जन्मदिन है, इसलिए मुझे बधाई दीजिएगा। यह सब बातें हम सब में देखने को मिलती हैं। जिस किसी को आपने पूछ लिया कि आप कौन हैं तो वह पानी पानी हो गया।

सारा संसार मुझे जानने वाला है कि मैं अग्नि देव हूँ। कौन है ऐसा जो मुझे नहीं जानता? जो अग्नि को नहीं जानता, यह कैसा व्यक्ति है, जो मुझे पूछ रहा है, आप कौन हैं? मानो एक ही बात ने सब ठंडा कर दिया। I don't know who you are? अपना परिचय दीजिएगा परमात्मा ने कहा। अग्निदेव ने कहा, "आप मुझे नहीं जानते, मैं अग्निदेव?" परमात्मा ने अगला प्रश्न पूछा, "क्या करते हैं आप? क्या गुण है आप में, जिसके कारण आपको अग्निदेव कहा जाता है? क्या काम करते हैं आप?" अग्निदेव ने कहा, "मैं जिसको दिल करे उसको जला कर राख कर सकता हूँ।" "हूँऊँऊँऊँ" भगवान श्री ने एक इतनी बड़ी हूँ करी। ऐसा कर सकते हो आप?

परमात्मा ने अपने सामने से एक तिनका उठाया कहा, "लो भाई! लो भाई इसको जलाकर मुझे दिखाओ।" जोर लगाया अग्नि देव ने, स्पर्श किया, फूँके मारी और न जाने क्या नहीं किया। अग्निदेव ने अपना पूरे का पूरा बल प्रयोग किया, लेकिन उस छोटे से तिनके को जला न सके। भारी शर्मिंदगी का अनुभव हो रहा है। मुँह लटकाया हुआ है। सारे के सारे देवता दूर से बैठे हुए यह सब देख रहे हैं। एक छोटा सा तिनका अग्निदेव नहीं जला सके। यहाँ बैठकर वह तो अपनी बड़ी प्रशंसा कर रहे थे, कि मैंने असुरों का यह कर दिया, मैंने वह कर दिया और वहाँ जाकर एक तिनका भी जलाने के योग्य नहीं रहे। मुँह लटका कर गए हैं। बड़ी शर्मिंदगी का अनुभव कर रहे हैं। पूछने तो यह गए थे कि आप कौन हो, अपना परिचय दीजिएगा जिसको यह पूछने गए थे पर वह मेरा परिचय माँग रहा है। मुँह लटका कर आ गए। "क्षमा करें, मैं पता नहीं कर सका कि वह कौन है?"

(श्री महाराज जी के प्रवचन, 4-4-2007 का अंश, क्रमशः अगले अंक में) ■

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : लोट

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)



रोहतांग के उस पार, सुदूर हिमालय की गोद में बसा, हिमाचल प्रदेश का छोटा सा जिला लाहौल और स्पिति और जिले का उपखंड लाहौल, चन्द्रभागा जैसी पौराणिक व पवित्र नदियों का देश। 1995 में इस भूखंड का भाग्योदय हुआ। गुरुजनों की कृपा दृष्टि पड़ी और परम पूज्य महाराज जी के चरण यहाँ पड़े।

शांशा गाँव के एक वरिष्ठ साधक के घर पर पूज्य महाराज श्री के सान्निध्य में प्रथम सत्संग का आयोजन किया गया। श्री अमृतवाणी पाठ व महाराज श्री के प्रवचन के पश्चात नाम दीक्षा का कार्यक्रम था। इस शुभ अवसर पर स्थानीय लोगों ने भारी संख्या में महाराज श्री द्वारा दीक्षा प्राप्त कर स्वयं को कृतार्थ किया। यह सिलसिला कई वर्षों तक चलता रहा। दीक्षित साधकों की संख्या दिनोदिन बढ़ती ही जा रही थी। एक बड़े सत्संग हॉल की आवश्यकता महसूस होने लगी।

संयोग से शांशा गाँव के ही बुजुर्ग साधक ने सत्संग हॉल बनाने का प्रस्ताव रख दिया। पूज्य महाराज श्री ने तुरन्त स्वीकृति प्रदान कर दी। बुजुर्ग साधक का प्रेम व भक्तिपूर्ण

मनोभाव, स्थानीय साधकों का अथक प्रयास व बाहर के साधकों के अटूट सहयोग के कारण ही, शीघ्र ही सत्संग भवन ने साकार रूप ले लिया। पूज्य महाराज श्री ने 21 जून 1999 को अपने कर कमलों द्वारा सत्संग हॉल का उद्घाटन किया। उपस्थित साधकों ने प्रसाद रूप में भोजन का स्वाद भी लिया। अंत में सैकड़ों लोगों ने स्वयं पूज्य महाराज श्री द्वारा दीक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य पाया।

परम पूज्य महाराज जी की कृपा दृष्टि लाहौल के अन्य गाँव लोट, जसरथ, जाहलमा व थिरोट पर भी पड़ी। अपने लाहौल प्रवास के समय, महाराज श्री उपरोक्त गाँव में भी सत्संग करना नहीं भूलते। उन दिनों महाराज श्री का रात्रि – विश्राम का प्रबन्ध थिरोट गाँव में बिजली बोर्ड के विश्राम गृह में किया जाता था।

साधकों की निरन्तर बढ़ती संख्या व पूज्य गुरुजनों का लाहौल वासियों के लिए विशेष प्रेम के कारण ही एक भव्य श्री रामशरणम् का निर्माण करने का सपना देखा जाने लगा। ऐसा श्री रामशरणम् जो कि सारे लाहौल के लिए केंद्र बिन्दु बन सके। लोट गाँव का चयन हुआ। इसी गाँव के एक बुजुर्ग साधक ने आगे बढ़ कर श्रीरामशरणम् के लिए भूदान किया। परम पूज्य महाराज जी के आशीर्वाद से कल्पना को साकार रूप लेने में अधिक समय नहीं लगा। स्थानीय साधकों के प्रयासों को साधुवाद। धनदान के अतिरिक्त श्रमदान द्वारा भी उन्होंने भवन निर्माण में पूर्ण सहयोग दिया। दिल्ली से लेकर मनाली तक के साधकों ने दिल खोल कर धन का दान किया और देखते ही देखते एक भव्य भवन का निर्माण सम्पूर्ण

हुआ। भवन के भीतर ही महाराज श्री के लिए एक कुटिया नुमा कमरे का भी निर्माण किया गया। स्त्री – पुरुषों के लिए पृथक – पृथक शौचालय व स्नानागार का निर्माण भी भवन परिसर में ही किया गया। 24 जून, 2003 के शुभ दिन, महाराज श्री के करकमलों द्वारा श्री रामशरणम् लोट का उद्घाटन हुआ।

जैसे की कल्पना की गई थी, श्री रामशरणम् लोट समस्त लाहौल वासियों के लिए केन्द्र बिन्दु बन गया। आरम्भ में त्रिदिवसीय सत्संग का आयोजन किया जाता

रहा जिस में असंख्य साधक शामिल हो कर कृतार्थ होते थे। आज भी जून मास में, हर वर्ष, द्विदिवसीय खुले सत्संग का आयोजन श्री रामशरणम् लोट में किया जाता है। गुरुजनों के आशीर्वाद से दीक्षा का भी प्रबन्ध किया जाता है। हर वर्ष अनेकों लोग दीक्षा प्राप्त कर प्रेम, भक्ति व कर्मयोग की राह पर चलने लग जाते हैं।

परम पूज्य गुरुजनों की कृपा बनी रहे, धर्म और कर्म के मार्ग पर चलने वालों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो, यही कामना है, प्रार्थना है।■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(फरवरी 2024 से जून 2024)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में 29 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 514 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बिलासपुर**, हिमाचल प्रदेश में 1 से 3 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 39 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फाजलपुर**, कपूरथला पंजाब में 9 से 10 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 11 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जबलपुर**, मध्यप्रदेश में 12 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 193 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में 13 से 16 मार्च तक साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 13 मार्च को 13 व्यक्तियों ने नाम

दीक्षा ग्रहण की।

- **रतनगढ़**, राज्यस्थान में 16 से 17 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 276 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **श्री रामशरणम् दिल्ली** में 23 से 25 मार्च तक होली के उपलक्ष्य में खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **नरोट मेहरा**, पंजाब में 26 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 98 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार**, हरियाणा में 30 से 31 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 18 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भरेड़ी**, हिमाचल प्रदेश में 6 अप्रैल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 59 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मंडी**, हिमाचल प्रदेश में 7 अप्रैल को एक

- दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 11 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **झाबुआ**, मध्यप्रदेश में 8 से 17 अप्रैल तक मौन साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
 - **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में 13 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 688 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **सिरसा**, हरियाणा में 14 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 118 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **हरिद्वार** में 19 से 24 अप्रैल तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
 - **हरिद्वार** में 27 से 30 अप्रैल तक झाबुआ के साधकों के लिए साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
 - **हरिद्वार** में 2 से 5 मई तक झाबुआ के साधकों के लिए साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
 - **ग्वालियर**, मध्यप्रदेश में 5 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 12 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **कंडाघाट**, हिमाचल प्रदेश में 12 मई को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 17 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **काठमांडू**, नेपाल में 16 से 18 मई तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 18 मई को 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **श्री रामशरणम् दिल्ली** में मार्च से जून तक 170 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **फरीदाबाद**, हरियाणा में 25 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 53 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **चम्बी**, हिमाचल प्रदेश में 26 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 48 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **जालंधर**, पंजाब में 2 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 163 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **चंडीगढ़** में 9 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 80 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **मनाली**, हिमाचलप्रदेश में 14 से 16 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 37 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
 - **सैल्सबर्ग**, पैनसिलवेनिया अमेरिका में 27 से 30 जून तक खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें नाम दीक्षा भी होगी।
 - **हरिद्वार** में परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में 30 जून से 3 जुलाई तक साधना सत्संग का आयोजन होगा।
- निर्माणाधीन श्री रामशरणम् की प्रगति**
- **नागोद**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् हॉल का लैंटर कुछ समय पहले डल गया था और अब फर्श और लाइट फीटिंग का कार्य तेजी से चल रहा है।
 - **जंडियाला गुरु**, पंजाब में श्री रामशरणम् में खुले सत्संग के लिए अखण्ड जाप का कमरा व 150 साधकों के ठहरने के लिए स्थान का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है और इसके दो तीन माह में पूरे होने की आशा है। ■

आप बीती

भ्रम भूल में भटकते, उदय हुए जब भाग।
मिला अचानक गुरु मुझे, लगी लगन की जाग।।

“नाम दीक्षा” के बाद मेरे जीवन में आए बदलाव और अनुभवों की फैरिस्त बनाऊँ तो शायद कई अंक छप जाएँ। “रंक से राजा बनाना” “वैभवशाली जीवन देना” तो हमारे गुरुजन अपनी दृष्टि मात्र से ही कर देते हैं। संगत में आने से साधकों में जो आध्यात्मिक उन्नति और व्यवहारिक परिवर्तन आते हैं, उनका तो कहना ही क्या।

विवाह से पूर्व, मुझे “नाम दीक्षा”, सत्संग”, “गुरु शिष्य परम्परा” और “निराकार ईश्वर की भक्ति” में न तो कोई विश्वास ही था और न ही कोई रुचि। “श्री रामशरणम्” संस्था से परिचय तो था, किन्तु कभी आना नहीं हुआ था। मेरे ससुराल में सभी यहाँ के रंग में रंगे हुए थे। मेरी डोली मायके से बिदा होकर “श्री रामशरणम्” ही आई। इस स्थान की सौम्यता, सादगी और अनुशासनबद्धता को देखकर एक अद्भुत सा आकर्षण अनुभव हुआ। उत्सुकतावश और पतिव्रत धर्म निभाते हुए मैंने 15 ही दिनों में “नाम दीक्षा” ले ली। एक नए परिवार में जो मुश्किलें एक नव-विवाहिता को होती हैं—मुझे भी हुई। काफी परेशान और उदास रहती। जब भी अवसर मिलता पूजनीय प्रेम जी महाराज के दर्शनों के लिए आने लगी।

श्री महाराज जी की दृष्टि मात्र से मेरी सहनशीलता बढ़ी और धीरे-धीरे मेरे वैवाहिक जीवन की गाड़ी पटरी पर आ गई। एक रात मुझे ऐसा सपना आया कि मैं अपनी नन्हीं बेटी को लिए एक बग्गी में बैठी हूँ जिसे 1 पगड़ी और चेक वाला कोट पहने एक वृद्ध चला रहे हैं। वह चित्र, आज 31 वर्ष बाद भी मेरे चित्त में ताजा है। मुझे आश्वासन मिल गया कि गुरु महाराज ही मेरी नैय्या के खेवैया हैं और मुझे

केवल उनके बताए हुए मार्ग पर चलना है। महाराज जी के शरीर छोड़ने के बाद डर लगने लगा कि अब मुझे कौन रास्ता दिखाएगा ?

एक वरिष्ठ सज्जन, जिनका, प्रेम जी महाराज जी से बहुत मिलना होता था, कभी-कभी मुझे भी मिलते। वे जब भी मिलते—अश्रुभरे नेत्रों से सिर्फ गुरुवर की ही बातें करते थे। मुझे ऐसे अनुभव होता कि उन सज्जन के माध्यम से महाराज जी मुझे आश्वासन दे रहे हैं कि “वे” हमेशा मेरे अंग – संग हैं। ऐसा ही हुआ नौकरी में, गृहस्थी में, कई उतार-चढ़ाव आए किन्तु महाराज जी की कृपा से धैर्य बना रहा और सब काज ठीक होते चले गए।

एक बार सिलेंडर खरीदने के पैसे कुछ कम पड़ गए। पति दफ़तर जा चुके थे। मुझे बहुत घबराहट हुई कि अगर सिलेंडर वाला आया तो उसे पैसे कहाँ से दूँगी और अगर वो बिना दिए चला गया तो डाँट पड़ेगी कि पैसे रखे क्यों नहीं। मैंने महाराज जी के आगे प्रार्थना की। आप विश्वास नहीं करेंगे—दो पड़ोसी मेरे घर आकर पैसे देकर गए कि हमने तुझ से जो चीज मँगवाई थी उसके पैसे रख लो। पूरे उतने पैसे, जिनमें सिलेंडर लिया जा सके।

परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज जी के आने के बाद पहली बार साधना सत्संग में सम्मिलित होने का अवसर मिला। बहुत उच्च श्रेणी के और बहुत वरिष्ठ साधकों के साथ 5 रात्रि रहने का सुअवसर मिला। उन साधिकाओं की अविचल गुरु भक्ति, श्रद्धा, विश्वास और उनकी अनुशासन बद्धता से नया उत्साह मिला। आत्मनिरीक्षण का, अपने आप को सुधारने का (जिससे कि गुरु कृपा का पात्र बन सकूँ) अवसर मिला। बहुत आत्मग्लानि हुई कि कहाँ ये उच्च श्रेणी के गुरु कृपा के पात्र, ये

वरिष्ठ साधक और कहाँ मैं—विकारों से भरी। बहुत कुछ पाया उन 6 दिनों में। पहली बार, गीता जी का पाठ पड़ा। कुछ ज़्यादा समझ नहीं आया, पर ऐसा जरूर लगा कि पूजनीय गुरुवर मुझे सुधारने के लिए यहाँ लाए हैं। परिवार से दूर रह कर समझ आया कि मेरे माता-पिता ने मुझे अच्छा, सच्चा, सुखमय जीवन देने के सभी अनथक प्रयत्न अवश्य किए, किन्तु, इस “मानव जीवन की महत्ता” और “उसको जीने की कला” तो गुरु महाराज ने ही सिखाई।

सत्संग की समाप्ति पर लगा कि आज, एक बार फिर, मेरे पिता मेरी डोली इस संसार रूपी ससुराल में भेज रहे हैं। इस शिक्षा के साथ –

**“जीवन डोरी साँप दो, राम जी के हाथ में।
डगर-डगर पर पाओगे राम जी को साथ में”**

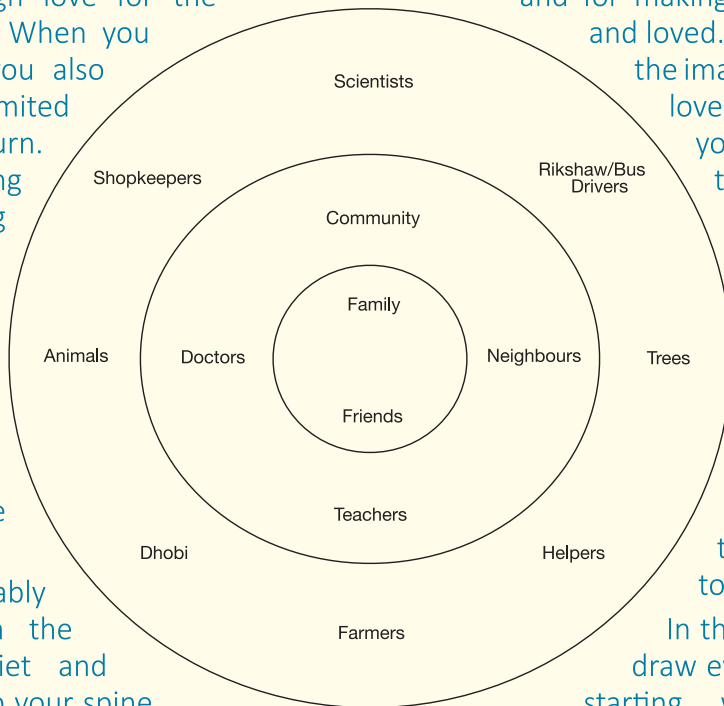
इन भावों के साथ महाराज जी को पत्र लिखा किन्तु देने का साहस नहीं जुटा पाई। जरूरत भी नहीं थी। भावों को भली भाँति पढ़ लेने में गुरुवर अग्रणीय हैं। शत् शत् नमन। जय जय राम। ■

Children Section

Growing love in your heart

Your heart is a physical organ in your body which is a little larger than the size of your fist. So really it is not that very big, but it can hold enough love for the entire universe. When you love like that you also receive unlimited love back in return. Imagine feeling and enjoying so much love. Wouldn't it be the best feeling in the world? So how do we grow love in our hearts? Let us try a simple exercise.

Sit comfortably cross-legged on the floor in a quiet and calm place. Keep your spine straight but relaxed. Take a deep breath in and breathe out slowly. Do this for a few counts, or at least 5 times. You may even chant RAM as you breathe out.



In your mind, send a whole lot of love to RAM for making you strong and healthy, for sending you love and blessings everyday, and for making you feel special and loved. Now slowly bring the images of people you love, one by one in your mind and send them love too. You can imagine hugging them or giving them a high-five, and hold on to that warm and fuzzy feeling in your heart. Slowly expand that circle of love to others.

In the circles, write or draw everyone you love, starting with immediate family and relatives and see how far you are able to expand that love to include everyone and every living thing in your life. ■

Sadhna Satsang (July to December 2024)

Haridwar	30 June to 3rd July	Sunday to Wednesday
Haridwar	16 to 21 July	Tuesday to Sunday
Haridwar	30 September to 3 October	Monday to Thursday
Haridwar (Ramayani)	3 to 12 October	Thursday to Saturday
Haridwar	11 to 14 November	Monday to Thursday
Kapurthala	29 November to 2 December	Friday to Monday

Naam Deeksha in Other Centers (July to December 2024)

Mumbai	14 July	Sunday
Obedullagunj	07 September	Saturday
Hoshiarpur	08 September	Sunday
Gurdaspur	29 September	Sunday
Pathankot	27 October	Sunday
Gwalior	07 November	Thursday
Jammu	10 November	Sunday
Kathua	17 November	Sunday
Sujanpur	24 November	Sunday
Kapurthala	01 December	Sunday
Alampur	03 December	Tuesday
Melbourne	08 December	Sunday
Devas (M.P.)	15 December	Sunday
Surat	22 December	Sunday
Bhiwani	29 December	Sunday

Open Satsang (July to December 2024)

Mumbai	14 - July	Sunday
Delhi	27 to 29 July	Saturday to Monday
Rohtak	10 to 11 August	Saturday to Sunday
Obedullagunj	07 September	Saturday
Hoshiarpur	08 September	Sunday
Rewari	14 to 15 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	27 to 29 September	Friday to Sunday
Pathankot	26 to 27 October	Saturday to Sunday
Gwalior	6 to 7 November	Wednesday to Thursday
Jammu	8 to 10 November	Friday to Sunday
Kathua	17 November	Sunday
Sujanpur	22 to 24 November	Friday to Sunday
Alampur	3rd December	Tuesday
Melbourne (Australia)	6 to 8 December	Friday to Sunday
Surat	21 to 22 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	28 to 29 December	Saturday to Sunday

Purnima (July to December 2024)

July	21	Sunday
August	19	Monday
September	18	Wednesday
October	17	Thursday
November	15	Friday
December	15	Sunday

Naam Deeksha In Shree Ram Sharnam Delhi (July to December 2024)

July	21	Sunday	4.00 PM
August	18	Sunday	10.30 AM
September	22	Sunday	10.30 AM
October	13	Monday	10.30 AM
November	3	Tuesday	11:00 AM
December	8	Wednesday	11:00 AM



यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कॅनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com

E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org